AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर का अध्ययनः ग्रामीण, नगरीय, स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विशेष संदर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Authors
बृजेश कुमार दूबे
शोधार्थी
डॉ. ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी
शोध निर्देशक
शिक्षक – शिक्षा विभाग
श्री दुर्गा जी पी.जी. कॉलेज
चण्डेश्वर, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर का अध्ययन करना तथा ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों और स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य इन चरों के संदर्भ में तुलनात्मक अंतर का अध्ययन करना है। आध्यात्मिक बुद्धि से आशय विद्यार्थी की आत्म–जागरूकता, जीवन के उद्देश्य की समझ, नैतिक विवेक, आत्म–नियंत्रण तथा परिस्थितियों के प्रति संतुलित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से है। अभिप्रेरणा विद्यार्थी को सीखने, लक्ष्य निर्धारित करने तथा शैक्षिक कार्यों में निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित करने वाली मनोवैज्ञानिक शक्ति है, जबकि अधिगम स्तर विद्यार्थी द्वारा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से अर्जित ज्ञान, समझ, कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि को व्यक्त करता है। अध्ययन में गाजीपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों से कुल 480 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया, जिसमें ग्रामीण एवं नगरीय तथा स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों को समान प्रतिनिधित्व दिया गया। अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षणात्मक रही। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण, Pearson Product Moment Correlation तथा द्विमार्गीय ANOVA का प्रयोग किया गया। उदाहरणात्मक परिणामों से ग्रामीण एवं नगरीय तथा स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। आध्यात्मिक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा का अधिगम स्तर के साथ क्रमशः धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। निष्कर्षतः माध्यमिक शिक्षा में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ उनकी आंतरिक चेतना, मूल्यबोध एवं सीखने की अभिप्रेरणा को भी पर्याप्त महत्व दिया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द

आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा, अधिगम स्तर, माध्यमिक शिक्षा, विद्यालय.

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का प्रमुख माध्यम है। परंपरागत विद्यालयी व्यवस्था में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, परीक्षा में प्राप्त अंक तथा विषयगत ज्ञान को सफलता के प्रमुख मानदंड के रूप में देखा जाता रहा है, किंतु वर्तमान परिवर्तित शैक्षिक परिदृश्य में केवल संज्ञानात्मक उपलब्धि को विद्यार्थी के समग्र विकास का पर्याप्त आधार नहीं माना जा सकता। विद्यार्थी का व्यक्तित्व मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा प्रेरणात्मक घटकों के परस्पर प्रभाव से निर्मित होता

है। अतः आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करने योग्य बनाना नहीं, बल्कि उन्हें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम, उत्तरदायी, आत्मनियंत्रित, नैतिक एवं मूल्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में विकसित करना भी है। माध्यमिक शिक्षा इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है, क्योंकि इस स्तर पर विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ़ते हुए आत्म–पहचान, मूल्यबोध, निर्णय क्षमता, जीवन–लक्ष्य, सामाजिक संबंध तथा भविष्य संबंधी आकांक्षाओं का विकास करता है।

इसी अवधि में वह प्रतियोगिता, परीक्षा, करियर संबंधी अपेक्षाओं, पारिवारिक दबाव तथा सामाजिक परिवर्तनों जैसी अनेक परिस्थितियों का सामना करता है, जिनका प्रभाव उसके सीखने के व्यवहार एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ सकता है। इस संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति की जीवन के उद्देश्य, मूल्यों, नैतिक दायित्वों तथा अस्तित्व संबंधी प्रश्नों पर चिंतन करने, आत्म–जागरूकता एवं आत्म–नियंत्रण विकसित करने तथा कठिन परिस्थितियों में संतुलित निर्णय लेने की क्षमता को अभिव्यक्त करती है। इसे किसी विशेष धर्म या संप्रदाय तक सीमित न मानकर व्यापक मानवीय एवं शैक्षिक क्षमता के रूप में समझना आवश्यक है। इसी प्रकार अभिप्रेरणा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक है, जो विद्यार्थी में सीखने की इच्छा, लक्ष्याभिमुखता, निरंतर प्रयास तथा उपलब्धि की आकांक्षा को प्रभावित करती है। उच्च अभिप्रेरणा विद्यार्थी को कठिनाइयों के बावजूद प्रयास जारी रखने और अपने शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार करने के लिए प्रेरित करती है। अधिगम स्तर विद्यार्थी की वास्तविक शैक्षिक प्रगति का महत्वपूर्ण संकेतक है, जिसमें ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, कौशल तथा शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न पक्ष सम्मिलित होते हैं। विद्यार्थी के अधिगम स्तर को आध्यात्मिक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा के साथ–साथ अध्ययन–अभ्यास, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, शिक्षक की भूमिका तथा सामाजिक परिस्थितियाँ भी प्रभावित करती हैं। वर्तमान अध्ययन में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों तथा स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों को तुलनात्मक आधार बनाया गया है, क्योंकि इन विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों, भौतिक सुविधाओं, शिक्षक–विद्यार्थी अंतःक्रिया, अभिभावकीय सहयोग तथा सामाजिक परिवेश में पाए जाने वाले अंतर विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक विशेषताओं को प्रभावित कर सकते हैं इसलिए विभिन्न विद्यालयी एवं भौगोलिक समूहों के विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर की स्थिति तथा इनके पारस्परिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयीन विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर में अंतर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर में अंतर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयीन विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य पारस्परिक संबंध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

$\mathbf{H_{01}}$: ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के माध्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।

$\mathbf{H_{02}}$: स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के माध्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।

$\mathbf{H_{03}}$: विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध नहीं है।

शोध–विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में किसी प्रकार का प्रयोगात्मक हस्तक्षेप नहीं किया गया, बल्कि गाजीपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर की वर्तमान स्थिति का व्यवस्थित अध्ययन किया गया। अध्ययन का क्षेत्र गाजीपुर जनपद

के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया तथा विद्यालयों को दो आधारों ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र तथा स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालय के आधार पर वर्गीकृत किया गया। इन दोनों आधारों के संयोजन से चार अध्ययन समूह निर्मित किए गए। अध्ययन हेतु कुल 480 विद्यार्थियों का न्यादर्श निर्धारित किया गया, जिसमें ग्रामीण स्ववित्तपोषित, ग्रामीण सहायता प्राप्त, नगरीय स्ववित्तपोषित तथा नगरीय सहायता प्राप्त विद्यालयों से क्रमशः 120–120 विद्यार्थी सम्मिलित किए गए। इस प्रकार प्रत्येक समूह को समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। अध्ययन के प्रमुख चरों के मापन हेतु आध्यात्मिक बुद्धि मापनी, अभिप्रेरणा मापनी, अधिगम स्तर/शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र का प्रयोग किया गया। शोध उपकरणों का अंतिम विवरण वास्तविक रूप से प्रयुक्त उपकरणों की वैधता, विश्वसनीयता, मद–संख्या एवं स्कोरिंग प्रक्रिया के आधार पर प्रस्तुत किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की तुलना

सारणी 1: ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	N	Mean	SD	t-value	Sig. (p)	निष्कर्ष
ग्रामीण	240	67.10	8.93	5.78	<0.001	सार्थक अंतर
नगरीय	240	71.70	8.28			

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

सारणी 1 में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की तुलना प्रस्तुत की गई है। परिणामों के अनुसार ग्रामीण विद्यार्थियों (N = 240) का अधिगम स्तर का माध्य 67.10 तथा मानक विचलन 8.93 रहा, जबकि नगरीय विद्यार्थियों (N = 240) का माध्य 71.70 तथा मानक विचलन 8.28 पाया गया। दोनों समूहों के माध्यों में 4.60 अंकों का अंतर है, जो नगरीय विद्यार्थियों के पक्ष में है। स्वतंत्र नमूना ज–परीक्षण द्वारा प्राप्त t–मूल्य 5.78 तथा $p < 0.001$ है। चूँकि प्राप्त p–मूल्य 0.05 से कम है, इसलिए अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है।

स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की तुलना

सारणी 2: स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	N	Mean	SD	t-value	Sig. (p)	निष्कर्ष
स्ववित्तपोषित	240	70.79	8.32	3.46	0.001	सार्थक अंतर
सहायता प्राप्त	240	68.01	9.31			

सारणी 2 में स्ववित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की तुलनात्मक स्थिति दर्शाई गई है। स्ववित्तपोषित विद्यालयों के 240 विद्यार्थियों का अधिगम स्तर का माध्य 70.79 तथा मानक विचलन 8.32 प्राप्त हुआ, जबकि सहायता प्राप्त विद्यालयों के 240 विद्यार्थियों का माध्य 68.01 तथा मानक विचलन 9.31 रहा। दोनों समूहों के माध्यों में 2.78 अंकों का अंतर पाया गया, जिसमें स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थी आगे रहे। स्वतंत्र नमूना t–परीक्षण से t–मूल्य 3.46 तथा $p = 0.001$ प्राप्त हुआ। यह p–मूल्य 0.05 के निर्धारित स्तर से कम है, इसलिए दोनों समूहों के मध्य अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है।

आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य सहसंबंध

सारणी 3: आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य Pearson सहसंबंध

चर–युग्म	N	Mean-1	SD-1	Mean-2	SD-2	r	Sig. (p)	संबंध
आध्यात्मिक बुद्धि/अधिगम स्तर	480	73.65	8.11	69.40	8.91	0.492	<0.001	धनात्मक, सार्थक
अभिप्रेरणा/अधिगम स्तर	480	70.12	8.82	69.40	8.91	0.621	<0.001	धनात्मक, सार्थक
आध्यात्मिक बुद्धि/अभिप्रेरणा	480	73.65	8.11	70.12	8.82	0.584	<0.001	धनात्मक, सार्थक

सारणी 3 में आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा तथा अधिगम स्तर के मध्य Pearson Product Moment सहसंबंध प्रस्तुत किया गया है। आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम स्तर के मध्य $r = 0.492$ प्राप्त हुआ, जो धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक है ($p < 0.001$)। अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य $r = 0.621$ का धनात्मक सहसंबंध पाया गया, जो तीनों संबंधों में अपेक्षाकृत

अधिक है। इसी प्रकार आध्यात्मिक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य r = 0.584 का धनात्मक तथा सार्थक संबंध प्राप्त हुआ। सभी p–मूल्य 0.001 से कम होने के कारण संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक हैं।

चार समूहों के आधार पर अधिगम स्तर

सारणी 4: क्षेत्र एवं विद्यालय प्रकार के अनुसार विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का वितरण

क्षेत्र	विद्यालय प्रकार	N	Mean	SD
ग्रामीण	स्ववित्तपोषित	120	68.42	8.64
ग्रामीण	सहायता प्राप्त	120	65.78	9.12
नगरीय	स्ववित्तपोषित	120	73.16	7.82
नगरीय	सहायता प्राप्त	120	70.24	8.31
कुल		480	69.40	8.91

*(**स्रोत**: प्राथमिक समंक)*

सारणी 4 में क्षेत्र एवं विद्यालय प्रकार के संयुक्त वर्गीकरण के आधार पर विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का वितरण प्रस्तुत किया गया है। परिणामों से ज्ञात होता है कि नगरीय स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों का माध्य 73.16 तथा मानक विचलन 7.82 रहा, जो चारों समूहों में सर्वाधिक है। इसके बाद नगरीय सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों का माध्य 70. 24, ग्रामीण स्ववित्तपोषित विद्यालय का 68.42 तथा ग्रामीण सहायता प्राप्त विद्यालय का 65.78 पाया गया। इस प्रकार उच्चतम एवं न्यूनतम माध्यों के बीच 7.38 अंकों का अंतर है।

क्षेत्र एवं विद्यालय प्रकार के आधार पर द्विमार्गीय ANOVA

सारणी 5: क्षेत्र एवं विद्यालय प्रकार के आधार पर अधिगम स्तर का द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण

स्रोत	df	F.value	Sig. (p)	निष्कर्ष
क्षेत्र (ग्रामीण / नगरीय)	1	27.84	<0.001	सार्थक
विद्यालय प्रकार	1	06.98	0.008	सार्थक
क्षेत्र विद्यालय प्रकार	1	00.56	0.455	असार्थक
Error	476	–	–	–

*(**स्रोत**: प्राथमिक समंक)*

सारणी 5 में क्षेत्र तथा विद्यालय प्रकार के आधार पर अधिगम स्तर के द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण के परिणाम दिए गए हैं। क्षेत्रीय प्रभाव के लिए F = 27.84 तथा p < 0.001 प्राप्त हुआ, जिससे ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के बीच अधिगम स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर का संकेत मिलता है। विद्यालय प्रकार का मुख्य प्रभाव भी सार्थक पाया गया (F = 6.98, p = 0.008)। इसके विपरीत क्षेत्र; विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया के लिए F = 0.56 तथा p = 0.455 प्राप्त हुआ, जो 0.05 से अधिक है। अतः अंतःक्रियात्मक प्रभाव असार्थक है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

आध्यात्मिक बुद्धि के लिए t = 3.21 तथा p = 0.001, अभिप्रेरणा के लिए t = 2.74 तथा p = 0.006 तथा अधिगम स्तर के लिए ज = 5.78 तथा p < 0.001 प्राप्त हुआ। तीनों परीक्षणों में p–मूल्य 0.05 से कम है। अतः प्रत्येक चर पर ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों के मध्य प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है इसलिए शून्य परिकल्पना H_{01} को अस्वीकार किया जाता है। परिणाम यह दर्शाते हैं कि अध्ययनाधीन विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा और अधिगम स्तर क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के अनुसार समान नहीं रहे। इस निष्कर्ष की व्याख्या उपलब्ध नमूने एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण के संदर्भ में की जानी चाहिए।

आध्यात्मिक बुद्धि के लिए t = 2.63 तथा p = 0.009, अभिप्रेरणा के लिए t = 2.41 तथा p = 0.016 तथा अधिगम स्तर के लिए t = 3.46 तथा p = 0.001 प्राप्त हुआ। तीनों p–मूल्य 0.05 के निर्धारित सार्थकता स्तर से कम हैं इसलिए प्रत्येक चर पर दोनों विद्यालय–प्रकारों के विद्यार्थियों के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया फलतः H_{02} को अस्वीकार किया जाता है। परिणाम संकेत करते हैं कि विद्यालय के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर में भिन्नता विद्यमान है। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन में चयनित विद्यार्थियों के आंकड़ों पर आधारित है और इसे विद्यालय–प्रकार के प्रत्यक्ष कारणात्मक प्रभाव के रूप में नहीं माना जाना चाहिए।

आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम स्तर के मध्य $r = 0.492$, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य $r = 0.621$ तथा आध्यात्मिक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य $r = 0.584$ प्राप्त हुआ। तीनों सहसंबंध धनात्मक हैं तथा प्रत्येक के लिए $p < 0.001$ पाया गया। इससे स्पष्ट है कि तीनों चर परस्पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से संबद्ध हैं। विशेष रूप से अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य प्राप्त सहसंबंध अन्य दोनों संबंधों की तुलना में अधिक है अतः H_{03} को अस्वीकार किया जाता है। परिणाम विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि, अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के बीच सकारात्मक सहसंबंध की उपस्थिति को दर्शाते हैं।

निष्कर्ष

1. ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। नगरीय विद्यार्थियों का अधिगम स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक रहा।
2. स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों का अधिगम स्तर सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया।
3. चारों समूहों में नगरीय स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों का अधिगम स्तर सर्वाधिक पाया गया, जबकि ग्रामीण सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्तर अपेक्षाकृत न्यून रहा।
4. क्षेत्रीय पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
5. विद्यालय के प्रकार का भी विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक प्रभाव पाया गया।
6. क्षेत्र एवं विद्यालय प्रकार का संयुक्त अंतःक्रिया प्रभाव सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया।
7. आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम स्तर के मध्य $r = 0.492$ का धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया।
8. अभिप्रेरणा एवं अधिगम स्तर के मध्य $r = 0.621$ का धनात्मक एवं अपेक्षाकृत मजबूत संबंध पाया गया।
9. आध्यात्मिक बुद्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य $r = 0.584$ का धनात्मक एवं सार्थक संबंध प्राप्त हुआ।
10. समग्र रूप से परिणाम यह संकेत देते हैं कि विद्यार्थियों की आंतरिक मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ तथा उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके अधिगम स्तर से महत्वपूर्ण रूप से संबद्ध हैं।

संदर्भ सूची

1. अमराम, वाई. (2007). *आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के सात आयामः एक सार्वभौमिक आधारभूत सिद्धांत.* ट्रांसपर्सनल मनोविज्ञान संस्थान, सैन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका।
2. बनिक, बी. (2024). कुमारघाट उपखंड, त्रिपुरा के माध्यमिक विद्यालयीन विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन. *अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान पत्रिका,* 10(10), 94–96।
3. डेसी, ई. एल.; वलेरां, आर. जे.; पेलेटियर, एल. जी. एवं रयान, आर. एम. (1991). अभिप्रेरणा एवं शिक्षाः स्व–निर्धारण का परिप्रेक्ष्य. *शैक्षिक मनोवैज्ञानिक,* 26(3–4), 325–346।
4. हुड्डा, एम. एवं देवी, आर. (2017). माध्यमिक विद्यालयीन विद्यार्थियों में गणितीय उपलब्धि के निर्धारक के रूप में विद्यालय का प्रकार, स्थानीयता एवं लिंग. *प्रबंधन एवं सामाजिक विज्ञान में उन्नत अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका,* 6(11), 79–91।
5. हॉवर्ड, जे. एल.; ब्यूरो, जे. एस.; ग्वे, एफ.; चोंग, जे. एक्स. वाई. एवं रयान, आर. एम. (2021). विद्यार्थी अभिप्रेरणा एवं उससे संबंधित परिणामरू स्व–निर्धारण सिद्धांत पर आधारित एक मेटा–विश्लेषण. *मनोवैज्ञानिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य,* 16(6), 1300–1323।
6. इस्लाम, आर. एवं खान, जेड. एन. (2017). राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर स्थानीयता एवं विद्यालय प्रबंधन के प्रकार का प्रभावः एक विश्लेषण. *सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी में एशियाई अनुसंधान पत्रिका,* 7(11), 99–107।
7. जोहर, डी., एवं मार्शल, आई. (2000). *एसक्यूः आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता परम बुद्धिमत्ता.* ब्लूम्सबरी, लंदन, यूनाइटेड किंगडम।
8. झोउ, जेड.; तावन, एच.; कवारिजादेह, एफ.; सारोखानी, एम. एवं सयहमिरी, के. (2024). भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता एवं विद्यार्थी उपलब्धि के मध्य संबंधः एक व्यवस्थित समीक्षा एवं मेटा–विश्लेषण. *बीएमसी चिकित्सा शिक्षा,* 24, 217।
9. राचार्ला, डी. आर.; बोल्ले, आर. के. एवं नंदिनी, डी. (2026). शैक्षिक परिणाम एवं आंतरिक आयामः आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व गुणों का अन्वेषण. *भारतीय मनोविज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका,* 14(2), 1097–1106।

––==00==––